सूरह — एक कहानी

सूरह फ़ुस्सिलत

तफ़सील से बयान

पूरा सफ़र — वो बात जिसका कभी जवाब न दिया गया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 41 • 54 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

एक नज़र में सूरह

किताबुन फ़ुस्सिलत आयातुहू क़ुरआनन 'अरबिय्यल्-लि-क़ौमिंय्-य'लमून
3. एक किताब जिसकी आयतें तफ़सील से बयान की गईं, एक अरबी क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो जानते हैं।

क़ुल इन्नमा अना बशरुम्-मिस्लुकुम यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्-वाहिद
6. कहो: मैं तो बस तुम जैसा एक इंसान हूँ, मुझे वही की जाती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है।

इन्नल्-लज़ीन क़ालू रब्बुनल्-लाहु सुम्मस्तक़ामू ततनज़्ज़लु 'अलैहिमुल्-मलाइकतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू
30. जिन्होंने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर वो साबित-क़दम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न डरो न ग़मगीन हो।

व ला तस्तविल्-हसनतु व लस्-सय्यि-अह। इद्फ़'अ बिल्लती हिय अह्सन
34. और भलाई और बुराई बराबर नहीं। बुराई को उस चीज़ से दफ़्अ करो जो बेहतर हो।

सनुरीहिम आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम हत्ता यतबय्यन लहुम अन्नहुल्-हक़्क़
53. हम उन्हें अपनी निशानियाँ उफ़ुक़ में और ख़ुद उनके अंदर दिखाएँगे, यहाँ तक कि उन पर वाज़ेह हो जाए कि यही हक़ है।

अ व लम यक्फ़ि बि-रब्बिक अन्नहू 'अला कुल्लि शै-इन शहीद
53. क्या तुम्हारे रब के बारे में ये काफ़ी नहीं कि वो हर चीज़ पर गवाह है?

दिलों पर पर्दे

बेटा, ये सूरह अपना नाम अपनी तीसरी आयत से लेती है: '**किताबुन फ़ुस्सिलत आयातुहू क़ुरआनन 'अरबिय्यल्-लि-क़ौमिंय्-य'लमून** — एक किताब जिसकी आयतें **तफ़सील से बयान** की गईं, एक अरबी क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो **जानते** हैं।'

'**फ़ुस्सिलत**' — अलग अलग की गईं, खोल कर रखी गईं, जुमला-दर-जुमला समझाई गईं। बेटा, **कुछ मुबहम न छोड़ा गया; कोई ज़रूरी चीज़ न छुपाई गई।** और

फिर भी: 'बशीरंव्-व नज़ीरन **फ़-अ'रज़ अक्सरुहुम फ़-हुम ला यस्म'ऊन** — ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला — मगर **उन में से ज़्यादातर मुँह मोड़ गए, तो वो सुनते नहीं।**'

और फिर, बेटा, सुनिए क़ुरैश ने जवाब में दर-असल क्या कहा — **क़ुरआन उनके ठीक अल्फ़ाज़ दर्ज करता है**: '**व क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्'ऊना इलैहि** — और उन्होंने कहा: **हमारे दिल** उस चीज़ से **पर्दों** में हैं जिसकी तरफ़ तुम बुलाते हो — **व फ़ी आज़ानिना वक़्र** — और हमारे **कानों** में **बोझ** है — **व मिम्-बैनिना व बैनिक हिजाब** — और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक **आड़** है — **फ़'मल इन्नना 'आमिलून** — तो तुम **काम** करो; बेशक, हम काम कर रहे हैं।'

बेटा, एक क़ाबिल-ए-ज़िक्र बात ग़ौर कीजिए: **वो बंद होने पर फ़ख़्र कर रहे हैं।** वो ये नहीं कह रहे *'हम समझते नहीं'* — **वो एलान कर रहे हैं कि उन्होंने ख़ुद को जान-बूझ कर सील कर लिया**: ढँके दिल, बंद कान, बीच में एक दीवार। और फिर, तक़रीबन एक कंधे उचका कर: *तुम अपने काम में लगे रहो, हम अपने में लगे रहेंगे।*

और नबी ﷺ को सब से सादा जवाब देने को कहा गया: '**क़ुल इन्नमा अना बशरुम्-मिस्लुकुम यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्-वाहिद** — कहो: मैं तो बस **तुम जैसा एक इंसान** हूँ, मुझे वही की जाती है कि तुम्हारा **माबूद एक ही** माबूद है — **फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरुह** — तो उसकी तरफ़ **सीधे** रहो और उस से **मग़फ़िरत** माँगो।'

बेटा, **ये पूरा पैग़ाम एक लाइन में है: वो एक है; उसकी तरफ़ सीधे चलो; और जब जब भटको उन के लिए माफ़ी माँगते रहो।**

आसमान धुआँ था

फिर सूरह उनके इनकार का जवाब **तख़्लीक़ के पैमाने** से देती है — और बेटा, यहाँ कुछ तफ़सीलात हैरत-अंगेज़ हैं।

'क़ुल अ इन्नकुम ल-तक्फ़ुरून बिल्लज़ी ख़लक़ल्-अर्ज़ फ़ी यौमैनि व तज्'अलून लहू अन्दादा — कहो: क्या तुम सचमुच उस ज़ात का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को **दो दिनों** में बनाया, और उसके **शरीक** बनाते हो? ज़ालिक रब्बुल्-'आलमीन — यही जहानों का रब है।'

'व ज'अल फ़ीहा रवासिय मिन फ़ौक़िहा व बारक फ़ीहा **व क़द्दर फ़ीहा अक़्वातहा** — और उसने उस में उसके ऊपर मज़बूत पहाड़ रखे, और उस में **बरकत** डाली, **और उस में उसका रिज़्क़ मुक़र्रर किया** — फ़ी अर्बअति अय्यामिन सवा-अल्-लिस्-साइलीन — चार दिनों में, पूरे, पूछने वालों के लिए।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: अल्लाह ने '**उसका रिज़्क़ मुक़र्रर किया**' — **इस सय्यारे पर कभी जीने वाली हर मख़लूक़ का रिज़्क़ ज़मीन में तक़सीम कर दिया गया उस से पहले कि उन में से कोई वुजूद में आए।** वो मिट्टी जो आपको खिलाती है **वो आपके पर-दादा के पैदा होने से पहले भर दी गई।**

'**सुम्मस्तवा इलस्-समा-इ व हिय दुख़ान** — फिर वो **आसमान** की तरफ़ मुतवज्जोह हुआ **जब कि वो धुआँ था** — फ़-क़ाल लहा व लिल्-अर्ज़ि'तिया **तौ'अन औ करहा** — और उस से और ज़मीन से कहा: **आ जाओ, ख़ुशी से या मजबूरी से** — **क़ालता अतैना ताइ'ईन** — दोनों ने कहा: **हम ख़ुशी से फ़रमाँबरदार हो कर आ गए।**'

बेटा, क्या मंज़र है। आसमानों और ज़मीन को मुख़ातिब किया जाता है, **और वो जवाब देते हैं** — और उनका जवाब सिर्फ़ *'हम आ गए'* नहीं, बल्कि '**ताइ'ईन**', **ख़ुशी से फ़रमाँबरदार।** पूरी कायनात ने ख़ुद को पेश कर दिया।

और फिर, बेटा, इसे उस इंसान के पहलू में रखिए जो कहता है *'हमारे दिल पर्दों में हैं*। **आसमान ने हाँ कहा। ज़मीन ने हाँ कहा। सिर्फ़ इंसान, जिसे चुनाव दिया गया, ना कहता है।**

'फ़-क़ज़ाहुन्न सब्अ समावातिन फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन अम्रहा — तो वो उन्हें सात आसमान दो दिनों में मुकम्मल कर दे और **हर आसमान में**

उसका **हुक्म** इल्हाम किया — व ज़य्यन्नस्-समा-अद्-दुन्या बि-मसाबीह **व हिफ़्ज़ा** — और हमने क़रीबी आसमान को **चिराग़ों** से सजाया, **और हिफ़ाज़त** के तौर पर।'

उनकी अपनी खालें गवाही देंगी

और अब, बेटा, हम पूरे क़ुरआन के सब से होला देने वाले मंज़रों में से एक पर आते हैं — **और एक ऐसा जिसे आप कभी न भूलें जब आप अकेले हों और एक ऐसा काम करने वाले हों जो आप खुले-आम न करते।**

'व यौम युह्शरु अ'दा-उल्लाहि इलन्-नारि फ़-हुम यूज़'ऊन — और जिस दिन अल्लाह के **दुश्मन** आग की तरफ़ जमा किए जाएँगे, और वो **क़तारों** में रोक लिए जाएँगे — **हत्ता इज़ा मा जा-ऊहा शहिद 'अलैहिम सम्'उहुम व अब्सारुहुम व जुलूदुहुम बिमा कानू य'मलून** — यहाँ तक कि जब वो उस तक पहुँचेंगे, **उनके कान, उनकी आँखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी** उस की जो वो करते थे।'

बेटा, उस कचहरी का तसव्वुर कीजिए। **आदमी मुल्ज़िम खड़ा है, और बुलाए गए गवाह उसके अपने कान, उसकी अपनी आँखें, और उसकी अपनी खाल हैं।** वही आ'ज़ा जो उसने गुनाह के लिए इस्तेमाल किए **अब खड़े हो कर उसे बयान करते हैं।**

'व क़ालू लि-जुलूदिहिम **लिम शहिद्तुम 'अलैना** — और वो अपनी **खालों** से कहेंगे: **तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी?** — क़ालू **अन्तक़नल्लाहुल्-लज़ी अन्तक़ कुल्ल शै** — वो कहेंगी: **हमें उस अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को बुलवाया।**'

और फिर, बेटा, वो आयत जो असल तशख़ीस देती है: '**व मा कुन्तुम तस्ततिरून अंय्-यश्हद 'अलैकुम सम्'उकुम व ला अब्सारुकुम व ला जुलूदुकुम** — और तुम **इस से छुपते नहीं थे** कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगी — **व लाकिन ज़नन्तुम अन्नल्लाह ला य'लमु कसीरम्-

मिम्मा त'मलून** — **मगर तुमने समझा कि अल्लाह उस बहुत सी चीज़ को नहीं जानते जो तुम करते हो।**'

बेटा, **यही जड़ है।** गुनाह का ये मतलब नहीं होता कि इंसान अल्लाह के वुजूद का इनकार करता है — **इसका मतलब ये होता है कि उस लम्हे वो भूल जाता है कि अल्लाह देख रहे हैं।** एक ख़ामोश गुमान: *इतनी छोटी बात का हिसाब थोड़ी होगा।*

'व ज़ालिकुम ज़न्नुकुमुल्-लज़ी ज़नन्तुम बि-रब्बिकुम अर्दाकुम — और तुम्हारे उस **गुमान** ने जो तुमने अपने रब के बारे में किया **तुम्हें तबाह** कर दिया।'

कहो 'हमारा रब अल्लाह है' — फिर सीधे रहो

और अब, बेटा, उस सख़्ती के बाद, **क़ुरआन की सब से ख़ूबसूरत और सब से ज़्यादा नक़्ल की गई आयतों में से एक** आती है:

'**इन्नल्-लज़ीन क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू** — बेशक, वो जिन्होंने कहा: **हमारा रब अल्लाह है** — और **फिर साबित-क़दम रहे** — **ततनज़्ज़लु 'अलैहिमुल्-मलाइकतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू** — उन पर **फ़रिश्ते उतरते** हैं (कहते हुए): **न डरो और न ग़मगीन हो** — **व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्-लती कुन्तुम तू'अदून** — और उस **जन्नत की ख़ुशख़बरी** लो जिसका तुमसे वादा किया गया।'

बेटा, **दो शर्तें** देखिए, क्योंकि वो पूरा दीन हैं। **पहली** — 'क़ालू रब्बुनल्लाह': एक **एलान।** **दूसरी** — 'सुम्मस्तक़ामू': **और फिर वो सीधे रहे।**

वो लफ़्ज़ '**सुम्म**' — **और फिर** — वहीं हम में से ज़्यादातर जीते हैं। **एलान आसान है; तीन सेकंड लगता है। इस्तिक़ामत एक उम्र है।**

एक आदमी ने एक बार नबी ﷺ से पूछा: *मुझे इस्लाम की कोई ऐसी बात बताइए जिसके बारे में मुझे किसी और से पूछने की ज़रूरत न हो।* आपने ﷺ फ़रमाया: '**कहो: मैं अल्लाह पर ईमान लाया — और फिर साबित-क़दम रहो।**' बेटा, **एक मसरूफ़ आदमी के लिए पूरा दीन एक जुमले में।**

और इस्तिक़ामत का मतलब **कमालियत नहीं**, बेटा। नबी ﷺ ने फ़रमाया: '**साबित-क़दम रहो, और तुम कभी हर चीज़ कामिल तरह न कर पाओगे।**' इसका मतलब **रास्ते पर रहना — और जब उस से लड़खड़ाओ, वापस उस पर आना।** **वो जो गिरता और लौट आता है वो फिर भी 'मुस्तक़ीम' है; वो जो गिरता और पड़ा रहता है नहीं।**

और अज्र देखिए: फ़रिश्ते **तीन तोहफ़ों** के साथ उतरते — **न डरो** (जो आगे है उस के बारे में), **न ग़मगीन हो** (जो पीछे है उस के बारे में), और **जन्नत की ख़ुशख़बरी।**

'**नह्नु औलिया-उकुम फ़िल्-हयातिद्-दुन्या व फ़िल्-आख़िरह** — **हम दुनिया की ज़िंदगी में और आख़िरत में तुम्हारे दोस्त हैं** — व लकुम फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम व लकुम फ़ीहा मा तद्द'ऊन — और उस में तुम्हारे लिए वो है जो तुम्हारे **नफ़्स चाहें** और वो जो तुम **माँगो** — **नुज़ुलम्-मिन ग़फ़ूरिर्-रहीम** — बख़्शने वाले, रहीम की तरफ़ से **मेहमान-नवाज़ी** के तौर पर।'

बेटा, लफ़्ज़ '**नुज़ुल**' का मतलब **वो इस्तिक़बाली खाना है जो मेहमान के आने पर तैयार किया जाता है।** **जो कुछ बयान हुआ वो सिर्फ़ इस्तिक़बाल है — असली मेहमान-नवाज़ी शुरू होने से पहले।**

उस चीज़ से दफ़्अ करो जो बेहतर हो

और फिर, बेटा, एक आयत जो **आपके ताल्लुक़ात को किसी भी मशवरे से ज़्यादा बदल सकती है** जो आप कभी पढ़ेंगे:

'**व मन अह्सनु क़ौलम्-मिम्मन द'आ इलल्लाहि व 'अमिल सालिहंव्-व क़ाल इन्ननी मिनल्-मुस्लिमीन** — और उस से **बेहतर बात** वाला कौन जो **अल्लाह की तरफ़ बुलाए**, नेक अमल करे, और कहे: बेशक, मैं मुसलमानों में से हूँ?'

बेटा, **वुजूद में सब से बेहतर बात**, अल्लाह के मुताबिक़ — और तीन हिस्से ग़ौर

कीजिए: वो **अल्लाह की तरफ़ बुलाता** है, वो जिस पर बुलाता है उस पर **अमल** करता है, और वो **ख़ुद को मुसलमान कहने में शर्माता नहीं।**

'**व ला तस्तविल्-हसनतु व लस्-सय्यि-अह** — और **भलाई** और **बुराई बराबर नहीं** — **इद्फ़'अ बिल्लती हिय अह्सन** — (बुराई को) उस चीज़ से **दफ़्अ करो जो बेहतर हो** — **फ़-इज़ल्-लज़ी बैनक व बैनहू 'अदावतुन क-अन्नहू वलिय्युन हमीम** — **और फिर वो जिसके और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी थी गोया एक गहरा दोस्त बन जाएगा।**'

बेटा, वो वादा दोबारा पढ़िए। *'वो ठंडा पड़ जाएगा'* नहीं। *'लड़ाई ख़त्म हो जाएगी'* नहीं। **वो 'वलिय्युन हमीम' बन जाएगा — एक गर्म-जोश, क़रीबी दोस्त।**

और ठीक हुक्म ग़ौर कीजिए: 'इद्फ़'अ बिल्लती हिय **अह्सन**' — उस से दफ़्अ करो जो **बेहतर** हो। **सिर्फ़ बराबर नहीं।** कोई तुमसे सर्द है — **गर्म-जोश रहो।** कोई सख़्ती से बोलता है — **नरमी से जवाब दो।** कोई ताल्लुक़ काटता है — **हाथ बढ़ाओ।**

बेटा, **ये कमज़ोरी नहीं। ये बेहद ताक़त माँगता है**, और अल्लाह फ़ौरन ये कहते हैं: '**व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्-लज़ीन सबरू** — और ये किसी को नहीं दिया जाता सिवाए उन के जो **सब्र** करते हैं — **व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन 'अज़ीम** — और ये किसी को नहीं दिया जाता सिवाए **बड़े नसीब** वाले के।'

बेटा, उस में शरफ़ महसूस कीजिए: **अल्लाह नुक़सान का जवाब भलाई से देने की सलाहियत को एक बड़ा हिस्सा, भलाई का एक बहुत बड़ा नसीब कहते हैं।** ज़्यादातर लोग ये नहीं कर सकते — **और अल्लाह इसे एक ऐसा तोहफ़ा नाम देते हैं जो सिर्फ़ चंद को दिया जाता है।**

'**व इम्मा यन्ज़ग़न्नक मिनश्-शैतानि नज़्ग़ुन फ़स्त'इज़ बिल्लाह** — और अगर शैतान की तरफ़ से कोई **बुरा ख़याल** तुम्हें आए, तो **अल्लाह की पनाह माँगो।**' बेटा, **और ये ठीक यहाँ इस लिए रखा गया है**: जब तुम बदी का जवाब भलाई से देने का फ़ैसला करते हो, **शैतान फ़ौरन सरगोशी करेगा कि तुम्हें ज़लील किया जा

रहा है। यही 'अ'ऊज़ु बिल्लाह' का लम्हा है।**

उफ़ुक़ में और ख़ुद में निशानियाँ

फिर सूरह हमें एक बड़ी मानी वाली छोटी सी तहज़ीब याद दिलाती है: '**ला तस्जुदू लिश्-शम्सि व ला लिल्-क़मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्-लज़ी ख़लक़हुन्न** — **सूरज** या **चाँद** को **सजदा मत करो**, बल्कि **अल्लाह** को सजदा करो, **जिसने उन्हें बनाया।**' बेटा, एक सजदे की आयत — और एक उसूल: **कभी निशानी को मत पूजो; उस ज़ात को पूजो जिसने उसे बनाया।**

और ये ख़बरदार करती है कि लोग ख़ुद क़ुरआन को कैसे लेते हैं: 'व लौ ज'अल्नाहु क़ुरआनन अ'जमिय्यल्-ल-क़ालू लौला फ़ुस्सिलत आयातुह — और अगर हम इसे एक **अजमी** (ग़ैर-अरबी) क़ुरआन बनाते, तो वो कहते: इसकी आयतें **तफ़सील से** क्यों बयान नहीं की गईं?' बेटा, **एक दिल जो ए'तिराज़ करने पर तुला हो हमेशा एक ए'तिराज़ ढूँढ लेगा। जो भी भेजा जाता, वो उस पर शिकायत करते।**

'क़ुल हुव लिल्लज़ीन आमनू **हुदंव्-व शिफ़ा** — कहो: जो ईमान लाए उनके लिए ये **हिदायत** और **शिफ़ा** है — वल्-लज़ीन ला यु'मिनून फ़ी आज़ानिहिम वक़्रुंव्-व हुव 'अलैहिम 'अमा — और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और ये उन पर अंधापन है।' बेटा, **वही किताब: एक के लिए दवा, और दूसरे के लिए कुछ भी नहीं। फ़र्क़ रिसीवर में है।**

और फिर, बेटा, सूरह **क़ुरआन के सब से अज़ीम वादों में से एक** की तरफ़ बढ़ती है:

'**सनुरीहिम आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम हत्ता यतबय्यन लहुम अन्नहुल्-हक़्क़** — **हम उन्हें अपनी निशानियाँ उफ़ुक़ में और ख़ुद उनके अंदर दिखाएँगे यहाँ तक कि उन पर वाज़ेह हो जाए कि यही हक़ है।**'

बेटा, दोनों मैदान ग़ौर कीजिए: '**अल-आफ़ाक़**' — उफ़ुक़, बाहर की दुनिया — और '**अन्फ़ुसिहिम**' — ख़ुद उनके अंदर। **और अल्लाह ने ये मुस्तक़बिल के सीग़े में

कहा: 'सनुरीहिम' — हम उन्हें दिखाएँगे।**

और तारीख़ ने यही किया है: **जैसे जैसे इंसानी इल्म बढ़ा — कहकशाओं की वुसअत से ले कर एक ही ख़लिये के अंदर की तरतीब तक — निशानियाँ ज़्यादा साफ़ होती गईं, कम नहीं।** बेटा, **हर सदी इस आयत को थोड़ा और पूरा करती है।**

और फिर वो आख़िरी जुमला, जो हर तलाश को ठिकाने लगा देता है: '**अ व लम यक्फ़ि बि-रब्बिक अन्नहू 'अला कुल्लि शै-इन शहीद** — **क्या तुम्हारे रब के बारे में ये काफ़ी नहीं कि वो हर चीज़ पर गवाह है?**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: वो हर चीज़ के गवाह हैं — **और इस लिए उन्हें साबित करने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं; बल्कि हर चीज़ उन्हीं से साबित होती है।**

और सूरह का इख़्तिताम: '**अला इन्नहुम फ़ी मिर्यतिम्-मिल्-लिक़ा-इ रब्बिहिम** — सुनो! वो अपने रब से **मुलाक़ात** के बारे में **शक** में हैं — **अला इन्नहू बि-कुल्लि शै-इम्-मुहीत** — सुनो! **वो हर चीज़ को घेरे हुए हैं।**'

इस सूरह से क्या सीखा

1. कुछ मुबहम न छोड़ा गया — और फिर भी लोग मुँह मोड़ते हैं; कुछ तो बंद होने पर फ़ख़्र भी करते हैं।

2. आसमान और ज़मीन ने 'ख़ुशी से' हाँ कहा — सिर्फ़ इंसान, जिसे चुनाव दिया गया, ना कहता है।

3. आपका रिज़्क़ ज़मीन में आपके पैदा होने से बहुत पहले मुक़र्रर कर दिया गया।

4. गुनाह की जड़ इनकार नहीं — वो ख़ामोश गुमान है कि 'अल्लाह ये नहीं देख रहे'; और उसी गुमान ने उन्हें तबाह किया।

5. पूरा दीन एक जुमले में: 'कहो हमारा रब अल्लाह है — **फिर** साबित-क़दम रहो'; और इस्तिक़ामत का मतलब कमालियत नहीं, वापस आना है।

6. 'इद्फ़'अ बिल्लती हिय अह्सन' — दुश्मन को गहरा दोस्त बना देने वाला नुस्ख़ा, जो

सिर्फ़ सब्र वालों को दिया जाता है।

7. निशानियाँ उफ़ुक़ में और आपके अंदर दिखाई जाती रहेंगी — मगर वो हर चीज़ पर गवाह हैं, और यही काफ़ी है।

या अल्लाह, हमें उन में बनाइए जिन पर फ़रिश्ते उतरें कि 'न डरो न ग़मगीन हो' — और हमें बुराई का जवाब भलाई से देने का बड़ा नसीब अता फ़रमाइए। आमीन।